प्रातःक्लास 30/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्तिः जब बच्चे और बाप एक दो में मिलते हैं, एक/दो में नज़र मिलाते हैं, मिलेंगे तो ज़रूर नज़र मिलेगी ना। यह जीवात्माएं परमात्मा के साथ नज़र मिलाती हैं। वह भी शरीर में बैठे हैं तब निहाल हो जाते हैं। उनके पहले तो बेहाल थे। बच्चे समझते भी हैं बाप जब आते हैं तो हम सारे विश्व के मालिक बनते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार 5000 वर्ष पहले मिसल तुमको यह बाप मिला है और तुम अन्दर में समझते हो कि हम अभी विश्व के मालिक बनते हैं। इसको कहा जाता है निहाल। तुम हर 5000 वर्ष बाद निहाल होते हो बाप से नज़र मिला करके। फिर आधा कल्प बाद जब रावण राज्य होता है तो बेहाल बनना शुरू होता है। यह खेल है। यह अच्छी बुद्धि में बैठ जाना चाहिए। कोई नई बात नहीं। एक अक्षर से समझने की बात है। वह खेल सुनाने में तो कितना समय लगता है। यह तो एक अक्षर की बात है। बाप मिला तो ज़रूर बेहद की बादशाही मिलेगी। निश्चय बुद्धि सारे विश्व पर विजय पहनते हैं। संशय बुद्धि तो विजय पा न सके। बाप जानते हैं भक्ति मार्ग में तुमने बहुत टाइम वेस्ट किया है, पैसा खर्च कर वेस्ट गंवाया है। तुम विश्व के मालिक थे फिर ऐसे चक्र लगाया, यह भी बुद्धि में याद करना पड़ता है। हमने 84 का चक्र लगाया। हमारा यह हाल हुआ है। फिर अभी बेहद का बाप मिला है। जो नज़र से निहाल कर देते हैं और हमें विश्व का मालिक बनाते हैं। तो बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है। इसमें मुँझने की बात ही नहीं। बाप मिला निश्चय हुआ तो ज़रूर वर्से का भी निश्चय हुआ। बाप में ही संशय हुआ तो वर्सा मिलेगा ही कैसे। यह तो बिल्कुल सहज समझने की है। और कोई भी शास्त्र आदि में सहज राजयोग की बात है नहीं। ऐसा कोई भी वेद, शास्त्र, ग्रंथ आदि नहीं है। एक ही गीता सर्व शास्त्र मई..... गाई हुई है। ऊँच ते ऊँच श्रीमद्भगवतगीता कहा जाता है। बाकी सभी है रचना। बाप रचयिता तुमको जो सुनाते हैं उससे तुम प्रारब्ध पाते हो। फिर वहां तो कोई शास्त्र आदि होते ही नहीं। यह सभी शास्त्र हैं भक्ति मार्ग के। इनसे फायदा कुछ भी नहीं। वह शास्त्र भी मनुष्य ही बनाते हैं। कोई भगवान नहीं बनाते। भगवान कब हाथ में शास्त्र आदि लेते हैं क्या। उनका गुरु, टीचर कोई है क्या। यह तो सुप्रीम ज्ञान का सागर है। यह भी तुम अभी ही समझते हो। और कोई भी विद्वान, आचार्य, पंडित आदि कुछ नहीं जानते। यह भी वर्थ नॉट अपेनी था। यह रथ जो है बहुत जन्मों के अंत में वर्थ नॉट अपेनी बन गया है। फिर इनको पहले नम्बर में जाना है; इसलिए इसमें ही प्रवेश करना है। यह ड्रामा चेंज नहीं हो सकता। जैसे लौकिक बाप का वर्सा पाने में निश्चय है ना। बच्चा पैदा हुआ वैसे वर्से का हकदार हुआ। यह भी ऐसे ही है। यहां कुमार–कुमारी दोनों ही वर्सा पा सकते हैं। आत्मा ने बाप को पहचाना और वर्से का हकदार हुआ। आत्माएं सभी भाई हो जाती हैं। बाप समझाते हैं बच्चे अपन को भाई–2 समझो। नहीं तो बेहद के बाप से वर्सा कैसे लेंगे। सभी का कल्याण अथवा सद्गति अभी ही होती है। इसमें मुँझने अथवा कुछ भी पूछने की दरकार ही नहीं। हियर नो ईविल, सी नो ईवील ..... भल कुछ भी पढ़े–लिखे हों; परंतु वह बाप के आगे बोलो नहीं। बाप तो एक–एक अक्षर में ही निहाल कर देते हैं। हे बच्चों मामेकं याद करो। बच्चे जानते हैं बाप तो सृष्टि को बदलने वाला है। नई सृष्टि रचने वाला है। पुरानी दुनियाँ ख़त्म होनी है। समझते होते भी फिर भी बाप को भूल जाते है; इसलिए बाप को भी यहां ठहरना पड़ता है। नहीं तो है बिल्कुल सहज। बाप का परिचय भी मिला, 84 का चक्र समझाया। यह बहुत है। मुझे तो चले जाना चाहिए; परंतु जानता हूँ तुम्हारे साथ माया का युद्ध है; इसलिए घड़ी–2 भूल जाते हो। मैं चला जाऊँ फिर घड़ी–2 आऊँ? इसलिए जाता ही नहीं हूँ। तुम्हारे बिगर जाऊँगा ही नहीं। बच्चों साथ तो लव है ना। बाप कहते हैं मीठे बच्चे मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह मैं निश्चय करता हूँ; क्योंकि इसको योगाग्नि कहा जाता है। वह हठयोग आदि बिल्कुल ही अलग है। वह है शरीर के तन्दुरुस्ती के लिए। बाप ऐसे नहीं कहते कि धंधा–धोरी आदि छोड़ दो। नहीं। वह भी भल करो। सिर्फ़ मुझे याद करो और सभी की याद भुलाये दो। भल घर में रहो खाओ–पीयो

सभी कुछ करो। एक तो पवित्र रहो और दैवी गुण धारण करो। खान–पान जैसे देवताओं का है वैसा रखो। देवताओं के आगे कब प्याज़, सेकरीन आदि रखते हो? चाय भी नहीं रखते हो। यहां तो देखो ठंडी हो या गर्मी हो चाय ज़रूर पीते हैं। 50 कप चाय के पीने वाले, 50 सिरगेट पीने वाले भी होते हैं। एक आदत पड़ जाती है। बाप ने समझाया है रावण राज्य में ही तुम्हारा यह हाल हुआ है। पहले–2 हम देवताएं सर्व गुण सम्पन्न..... थे। फिर नीचे गिरे हैं। यह तो समझना बहुत ही सहज है। कोई बहाना बताते हैं। सिरगेट बिगर पेट ऐसा होता है। यह तकलीफ होती है। कुछ भी नहीं होता। किसको भी कोई बिमारी आदि है तो वैद लोग भी दवाई देते हैं। बाप कहते हैं बच्चे यह अन्तिम जन्म है। हिसाब–किताब सभी यहां चुक्त कर फिर निरोगी बन जावेंगे। यह भारत जब स्वर्ग था तो कितना हेल्दी, वेल्दी, पवित्र था। ख़्याल तो करो। आज से 5000 वर्ष पहले तुमको कितना अथाह धन था। तुम ही विश्व के मालिक थे। कितने साहूकार थे। निश्चय भी हुआ, पुरुषार्थ भी करते हैं बरोबर हम अभी तमोप्रधान बने हैं, ड्रामा प्लैन अनुसार अभी फिर से हम सतोप्रधान कैसे बने। बाप तो बहुत ही सहज उपा(य) बताते हैं। तुमको देवता भी ज़रूर बनना है। पुरुषार्थ भी ज़रूर करेंगे श्रीमत पर। अगर पुरु. न करेंगे तो कम पद हो जावेगा। यह बाप बैठ समझाते हैं। तुम आत्मा भी ज़रूर हो। पहले तुम आत्माएं हो मेरे बच्चे फिर यहां पार्ट बजाने आये हो ड्रामा के प्लैन अनुसार। 84 जन्म लेकर तुम पार्ट बजाते हो। अभी यह झाड़ जड़–जड़ी भूत हो गया है। यह सारी विश्व की पुरानी है। पहले–2 नई विश्व अर्थात् नई दुनियाँ थी। यह ल.ना. राज्य करते थे। बाप स्मृति दिलाते हैं। बच्चे तुम ही थे तुमने ही 84 जन्म लिए हैं। अभी फिर तुमसे ही मिला हूँ। कल्प–2 मिलूँगा। अभी तुम बच्चों को अपना गंवाया हुआ राज्य मिला है। माया रावण ने तुम्हारा राज्य आधा (कल्प) के लिए छीन लिया है। अभी फिर उस पर जीत पहनो। उसमें खर्चा आदि कुछ नहीं। रावण ने जब तुम्हारे से राज्य छीना तो भी कोई खर्चा वा लड़ाई आदि थोड़े ही हुआ। कुछ भी नहीं। सिर्फ़ दैवी गुणों वाले बदली आसुरी गुण वाले बन पड़े हो। वह है आसुरी सम्प्रदाय। तुम हो दैवी सम्प्रदाय। शास्त्रों में फिर देवताओं और असुरों की लड़ाई दिखा दी है। वह बात तो है नहीं। तुम्हारा लड़ाई है ही माया साथ। बाप कहते हैं मैं इतना सहज बताता हूँ फिर भी तुम भूल जाते हो। इस पढ़ाई से तुम मनुष्य से देवता डबल सिरताज बन जाते हो। याद से तुम्हारे पास लाइट आ जाती है और सृष्टि चक्र को जानने से तुम डबल सिरताज बन जाते हो। बाकी बाप कोई आशीर्वाद आदि नहीं देते। पढ़ाई से पद पाना है। ऐसा नहीं धनवान भव आयुष्मान भव। नहीं। यह पढ़ाई है, इसमें कुछ भी खर्चा नहीं। बहुत ग़रीब आते हैं। वह क्या खर्चा करते हैं। बहुत ग(रीब) साहूकारों से भी ऊँच चले जाते हैं। उनके पास कुछ भी नहीं है तो रिर्टन में सभी कुछ मिल जाता है। कैसे वह बाप बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं बच्चे बात तो एक ही है अलफ़ की। पिछाड़ी वे ते अर्थात् वर्सा का दुम्ब लटका हुआ ही है। यह तो कोई भी स(म)झ जाते हैं विश्व की बादशाही का दुम्ब लटका हुआ कितना सहज है। फिर भी तुम भूल जाते हो। तो क्या हालत हो जाती है। कोई न कोई विकारों की चम्बे में आ जाते हैं। सबसे जास्ती तीखा है काम महाशत्रु। बाबा को लिखते हैं हमने हार खा ली। बाबा कहते हैं मैं आया हूँ तुमको गोरा, सुन्दर बनाने तुम फिर श्याम बन काला मुँह करते हो। काला मुँह करने से तुम्हारी सारी की हुई कमाई चट हो जाती है। फिर से पुरुषार्थ करना पड़े। मैं आया ही हूँ पतित से पावन बनाने। बच्चू बादशाह पेरू वज़ीर की कहानी है ना। नम्बरवन गुरु होते हैं। माया भी बड़ा हुर है। नम्बरवन बच्चू बादशाह है काम। क्रोध है पेरे बजार(पेरू वज़ीर)। क्रोध से खुद भी जलते हैं। दूसरे को भी जलाते हैं। काम विकार बड़ा कड़ा है। सूरदास की भी कहानी है। सर्प को डोरी समझ कर ऊपर गया। विकार मे गिरा। फिर उनको समझ में आया हम कितना पापात्मा बन पड़ा। फिर उसने अपनी आँखें ही निकाल दी। बाप कहते हैं <u>आँखें बड़ी धोखा देने वाली है;</u> इसलिए तुमको यह आँखें निकाल ज्ञान का तीसरा नेत्र दे त्रिनेत्री बनाता हूँ। अपने को आत्मा समझो। हम सभी भाई–2 हैं। तो फिर शरीर का भान रहेगा नहीं। यह है बहुत बड़ी मंज़िल। इसमें पुरुषार्थ बहुत अच्छा चाहिए।

कोई पूरा पुरुषार्थ नहीं कर सकते हो भी सकूल में तो आ सकते हैं ना। स्कूल में कोई–2 को स्कॉलरशिप भी मिलती है। जो अच्छे पास होते हैं उनको इनाम मिलेगा। यह ल.ना. है। इनको स्कॉलरशिप मिली है ना। बाबा ने समझाया है माला है आठ की। चार जोड़ा, बाकी बीच में है हीरा। उनको गिना जाता नहीं। आठ युगल हैं जिसके लिए कहते हैं, आठ रत्न पहनो, कोई भी साधु संत इस माला का राज़ नहीं जानते हैं कि यह कौन हैं। प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो युगल बनते हैं। जो अच्छा पढ़ते हैं उनको स्कॉलरशिप मिलती है। बाकी है प्रजा। सभी को यही संदेश देना है कि बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। तुम पैगम्बर, मैसेंजर हो ना। सभी को यही पैगाम दो। और कोई न पैगम्बर है न मैसेंजर है न गुरु ही है। यह लोग नानक को, क्राइस्ट आदि को गुरु समझ लेते हैं। वास्तव में उनको बाप नहीं कहा जाता। बाप क्रियटर तो एक ही है। बाप ही पुरानी दुनियाँ को बदली करेंगे। बाप आते ही हैं नई दुनियाँ स्थापना और पुरानी का विनाश कराने। यह तो बिल्कुल ही क्लीयर है। आते ही तब हैं जब नई दुनियाँ बननी है। तो त्रिमूर्ति का चित्र बनाया है; परंतु उसमें बाप को दिखाया नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकार क्रियशन को दिखाय(ा) है। क्रियटर है नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी रचयिता तो चाहिए ना। अभी तुम बच्चों ने समझा है बाप है रचयिता। ब्रह्मा द्वारा स्थापना इनको भगवान नहीं कहा जाता। ब्रह्मा का ऑक्युपेशन तो समझाया है। बाप कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अंत के जन्म, वानप्रस्थ अवस्था में ..... तो क्या वह भगवान हुआ? देवता हुआ? कुछ भी नहीं। यह तो पतित है। तुम बुलाते भी हो पतित दुनियाँ में। तो पतित शरीर में ही आकर फिर तुमको पावन बनाता हूँ। तो ज़रूर सर्वशक्तिवान कहेंगे ना। माया भी फिर कम नहीं। तमोप्रधान कैसे बनते हैं यह कोई भी समझते थोड़े ही हैं। जैसे शिव का चित्र है, रावण का भी चित्र है। जलाते रावण को हैं; क्योंकि रावण दुःख देने वाला है। शिव तो सुख देने वाला है उनको थोड़े ही जलावेंगे। वह है सुखदाता, रावण है दुःखदाता। रावण राज्य में सभी विकारी वैश्यालय में हैं। बाप कहते हैं अभी शिवालय में चलो। मुझे याद करते रहो तो तुम मेरे पास पहुँच जावेंगे। माया याद में ही बहुत विघ्न डालती है। गुलवकावली का खेल भी इस पर है। तुम हर एक आत्मा का रूप भी है। बहुत सूक्ष्म है; परंतु है ज़रूर। सा. कर सकते हो ; परंतु समझ में नहीं आवेगा। फायर फ्लाय से भी बहुत महीन है। उनको जाना जा सकता है। मैं आत्मा हूँ। इन आँखों से देख नहीं सकते। हे परमात्मा कहते हो, उनको देखा है क्या? जैसे उनको जाना है वैसे आत्मा को भी जाना जाता है। भल दिव्य दृष्टि से देखा जा सकता है ; परंतु उससे कुछ भी समझ न सकेंगे। इतनी छोटी सी बिंदी गज़ब सितारे मिसल है। वह स्टार्स तो बहुत ही बड़े होते हैं। दूर से छोटी दिखाई प(ड़)ते हैं। चन्द्रमा ऊपर में बहुत बड़ा है तब तो (व)हां प्लाट लेने का करते हैं; परंतु कुछ भी हो नहीं सकता। इसको कहा जाता है अति घमण्ड माया का। तो फिर विनाश हो जाता है। यह है झूठ घमण्ड। है कुछ भी नहीं ऊपर में। फ़ालतू मेहनत करते रहते हैं। बाप ने समझाया है विनाश के लिए इ(न) बन्दूकों, एरोप्लैन या टेंक्स आदि की भी दरकार नहीं। वह कहते हैं घर बैठे हम ऐसे बॉम्प छोड़ेंगे जो झट ख़त्म हो जावेंगे। इसमें भी समझ चाहिए ना। खर्चा कितना करते हैं। चाहते हैं विश्व में शांति हो। तो इसके लिए मनुष्य भी थोड़े चाहिए ना। नई दुनियाँ में होते ही थोड़े हैं। पुरानी दुनियाँ बदलनी ही है। याद की यात्रा में तुमको कितना टाइम लगता है। शुरू के तुम बच्चे हो। फिर तुम योग में अपन को पास समझते हो? नहीं। जब नज़दीक समय आवेगा तो फिर खूब पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। स्कूल में जब इम्तहान के दिन होते हैं तो बच्चे पढ़ाई में बड़े ज़ोर से लग जाते हैं। रात–दिन मेहनत करते हैं। यह भी एक ही इम्तहान है। थोड़ा लोड़ा आदि आवेगा तो फिर अच्छी रीत पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। वैराग्य आवेगा। समझेंगे यह रिहर्सल होती है। बाप बैठ थोड़े ही जावेंगे। फिर तुम ज़ोर से पुरुषार्थ करने लगेंगे; परंतु फिर ऐसे समझ बैठ थोड़े ही जाना है। पुरुषार्थ तो अभी से ही करना है। जो भी दिव्य दृष्टि से देखा है तो पुरानी दुनियाँ को विनाश नई दुनियां की स्थापना वह भी फिर आँखों से देखेंगे। बाप समझाते हैं बच्चे यह दुनियाँ अभी बदलनी है; इसलिए ही यह बॉम्स आदि बन रहे हैं।

इसलिए ही यह बॉम्स आदि बन रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं। हर 5000 वर्ष बाद यह चक्र फिरता है। एक्टिविटी में ज़रा भी फ़र्क नहीं। न एक बढ़ेगा न कम होगा। इसको कहा जाता है बना बनाया ड्रामा। कब बना, यह नहीं कह सकते। अनादि बना बनाया ड्रामा है जो चलता ही रहता है। इनका न आदि है न अंत है। यह तो सदैव है ही है। तो मनुष्य फिर मुक्ति को कैसे पा सकते। मोक्ष किसका भी हो नहीं सकता। यह है आसुरी राज्य। मूर्खों की राजधानी। अभी तुम बच्चे समझते हो हम सभी आत्माएँ नंगे आए थे। यहां आकर हम शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमोप्रधान में आते हैं ना। फिर यह दुनियाँ तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। फिर वही चक्र रिपीट होना है। इसमें कोई गफ़लत की बात ही नहीं। बूढ़ियाँ बोलती हैं हमारा मुख नहीं खुलता है। अरे सिर्फ़ शिवबाबा को याद करो, वह हम आत्माओं का बाप है। मुख से कुछ भी बोलो नहीं। चुप रहो। बाप खुद कहते हैं चुप हो जाओ। एकदम गूँगा बना देते हैं। उनको गूँगे की मिठाई कहा जाता है। विश्व का राज तुमको मिलता है। कम बात है क्या। तुम्हारे अंदर में सारा चक्र फिरता है। 84 जन्म कैसे लेते हैं। गूँगे की मिठाई क्या है यह भी कोई समझते थोड़े ही हैं। बाप कहते हैं विश्व की बादशाही है गूँगे की मिठाई। वहां तो आत्माएं गूँगे रहती है। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं। फिर भी बच्चे गफ़लत करते रहते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी तुम याद कर सकते हो। उस घर को भी जैसे मंदिर बनाना है। जो भी आवे उनको पैगाम दो। ऐसे भी बहुत हैं खुद बांधेली हैं दूसरों को ज्ञान दे आप समान ब(ना) देती हैं। ऐसे मत समझो बांधेली सर्विस नहीं करती हैं, वह भी सर्विस करती हैं। सिर्फ़ फ्थकती हैं, विश्व की बादशाही देने वाले बाप से मिलें। अबलाओं पर अत्याचार और कहां भी कोई सतसंग आदि में नहीं होते। ढेर के ढेर सतसंगों में जाते हैं। कोई भी कहां जाने की मना नहीं करते हैं। गांधी के पास कितने जाते थे। समझते थे बापू जी रामराज्य स्थापन कर रहे हैं। फिरंगी को रवाना किया। बस यह रामराज्य हुआ। बाप कहते हैं राम राज्य तो क्या और ही जास्ती रावण हुआ है। कितने भूख–हड़ताल आदि करते जेल में जाते रहते हैं। कहते हैं गऊ हत्या न करो। अभी गवर्मेन्ट को इनसे कमाई कोई कम थोड़े ही है। कितने जूते आदि बनते हैं। गवर्मेन्ट समझेगी इतनी कमाई, आमदनी हमारी बंद हो जावेगी। और फिर शहर–2 में गऊशाला रखनी पड़े। खिलाना पड़े। उन्हों को तुम समझा सकते हो। तुम लिख भी सकते हो बाप कहते हैं पहले तो सभी को इस कोस से बचाना है। काम–कटारी चलाना यह कोस करना बंद करो। काम–कटारी चलाकर एक/दो को क़त्लाम करते हैं। सतयुग में यह कोस होता नहीं। पहले तो यह बंद करो। सन्यासी कहते हैं स्त्री सर्पनी है। वो भी सर्प हैं ना। अपना नाम न ले स्त्री का नाम लेते हैं। कितनी इनसल्ट करते हैं। ऐसे–2 को फिर गुरु करना कितनी मूर्खता है। माईयाँ जैसे कि पति की सेवा करती हैं। वैसे सन्यासियों के भी पांव धो उसको चरणामृत समझकर वह पीती हैं। कितना अधर्म हो गया है ; इसलिए भगवान कहते हैं मैं इन साधुओं का भी उद्धार करता हूँ। तुम फिर किसको अपना गुरु बनाते हो। क्या भगवान झूठ बोलते हैं? ऐसे–2 तुम फीमेल्स जाकर समझाओ। बात करने की हिम्मत चाहिए ; इसलिए शेरणी शक्ति कहा जाता है। निर्भय होना चाहिए। बाप निर्भय है ना। तुमको भी बनाते हैं। डरो मत। क्या करेंगे, सच्च तो तुमको बतानी ही है ना। इम्तहान बहुत ऊँचा है। ल.ना. बनना है। कम बात है क्या। सिर्फ़ याद मे ही माया विघ्न डालती है। इस पर ही लड़ाई चलती है। कोई सेन्टर भी खोलते हैं तो कितने आत्माओं का कल्याण होता है। तो इसका भी एवज़ा बहुत मिल जाता है। पैसा तो सभी मिट्टी में मिल जावेगा। हिम्मते बच्चे मददे तो बाप है ही है। कितने ढेर बच्चे मददगार बैठे हैं। भल बांधेलियाँ हैं, घर में चित्र रख दो सर्विस करते रहो। पैसे हैं तो सफ़ल करना चाहिए। नहीं तो सभी मिट्टी में मिल जावेगा। तुम न कर सको तो बाप बैठा है। हुण्डी बाप भरने वाला है। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।